शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

भारतीय ज्ञान परम्परा और आयुर्वेद चिकित्सा सम्बन्धी अवधारणा

डॉ. अनुराधा तिवारी
सहायक प्राध्यापक
आयुर्वेद संहिता एवं सिद्धान्त विभाग
आर.एन.कपूर मैमोरियल आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल इंदौर, (म.प्र.)

शोध सार

भारतीय ज्ञान की अक्षुण्ण परम्परा में संस्कृत साहित्य का योगदान सर्वविदित एवं अद्वितीय ही है। यदि हमें भारतीय ज्ञान की अद्वितीय परम्परा से उचित प्रकार जानकारी प्राप्त करनी है तो बिना संस्कृत साहित्य के सम्भव नही है। संस्कृत साहित्य ज्ञान का वह सागर है जिसमें गोते लगाकर हम ज्ञान की शीलता प्राप्त करते है। संस्कृत साहित्य के प्रत्येक पक्ष ने मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया है। संस्कृत वांग्मय को हम दो भागों में विभक्त कर सकते है-

1- वैदिक साहित्य 2- लौकिक साहित्य

वैदिक साहित्य में वैदिक परम्परा से आर्विभूत समस्त वेद सम्बन्धी साहित्य उपलब्ध होता है। इसके अन्तर्गत चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थववेद, सामवेद) 4 उपवेद, उपनिषद ग्रन्थ आदि वर्णित किए गए है। वेद ऐसी ज्ञान राशि के भण्डार रूप है, जिसमें सभी विद्याओं का आधार छिपा हुआ है। वेदों के सरलतापूर्वक अनुशीलन हेतु ही चारों उपवेदों की रचना की गई जिनमें से ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धर्ववेद व अथर्ववेद का अर्थवेद उपवेद के रूप में प्रतिष्ठित है।

बीज शब्द

यजुर्वेद, उपनिषद, प्रतिष्ठा, अनुशीलन, सृष्टि।

प्रस्तावना

हमारे देश की उपचार प्रणालियां वर्षों पुरानी है और आयुर्वेद पद्धति एक ऐसी प्रणाली है जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है यह मन शरीर और आत्मा

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

का सम्बोधन है आयुर्वेद मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए आहार तथा जीवन शैली में कुछ खठास व्यायाम शामिल करके अपनी दिनचर्या को संतुलित, संयमित और स्वस्थ बनाता है। सबसे प्राचीन ऋग्वेद माना जाता है तत्पश्चात् यजुर्वेद, सामवेद लिखे गए और सबसे अंत में अथर्ववेद लिखा गया इसलिए इन चारों वेदों में अथर्ववेद सबसे नवीन वेद माना गया है। हमारे वेदों में ज्योतिषशास्त्र, गणित, रसायन, औषधि, प्राकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक, नियम , उपनियम धरती, आकाश, सूर्य, चंद्रमा बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड का ज्ञान इनमें भरा है। भारत सम्पूर्ण विश्व में अपने आयुर्वेदिक प्रणाली के लिए एक विशिष्ट स्थान रखता है। विकसित भारत का सपना पूरा करने के लिए प्राचीन भारत और आधुनिक भारत को जोड़कर उसका लाभ लेकर एक समन्वित दृष्टिकोण का विकास करके की बल्कि मैं तो कहूँगी इन दोनों धाराओं में सामंजस्य से स्थापित करते हुए एक समृद्ध, विकसित, भारत की स्थापना हो सकती है जिससे भारतीय अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धति और प्राचीन वेदों को शिक्षा में स्थान देकर आयुर्वेद की विरासत पर गर्व कर सकते है।

उद्देश्य

आज भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में हम अपनी ज्ञान परम्परा व प्राकृतिक औषधियों के ज्ञान से दूर होते जा रहे है। इस शोध पत्र लेखन का मुख्य उद्देश्य आयुर्वेद चिकित्सा सम्बन्धी अवधारणा का अध्ययन करना है ।

शोध पद्धति

इस शोधपत्र लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीय स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। शीर्षक से संबंधित संस्कृत साहित्य ग्रंथो, आलोचनात्मक शोध पत्र पत्रिकाओं के अध्ययन से सामग्री एकत्र की गई है।

शोध विस्तार

भारतीय ज्ञान व्यवस्था अत्यंत प्राचीन एवं कल्याण पर आधारित है आयुर्वेद जीवनशैली और कल्याण से जुडी भारतीय दर्शन का एक बहुत महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जो वास्तव में भारत की परंपरागत चिकित्सा प्रणालियों पर विद्वता को बढावा देता है। आयुर्वेद पद्धति भारतीय छः

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

चिकित्सा प्रणालियों में सबसे समृद्ध प्रणाली है जिसका उद्देश्य मनुष्य की शारीरिक मानसिक और स्वयं के आत्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करना है। आयुर्वेद पर लिखा गया सबसे प्राचीन ग्रंथ चरक संहिता है जिसकी रचना 400-200 ई.पू. के आस पास मानी जाती गई है। आयुर्वेद अथर्ववेद की एक उपशाखा भी मानी जाती है हालाँकि आयुर्वेद की रचना भी सृष्टि के निर्माता ब्रह्माजी के श्री मुख से की गई थी जिसमें 1000 अध्याय एक लाख श्लोक थे जिसकी जानकारी सुश्रुत सहिंता में मिलती है जो कि वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। आयुर्वेद की विषय-वस्तु के मूल स्त्रोत हमारे वेद ही है और वेदो में ही लिखा है कि मनुष्य जीवन का संबंध आयुर्वेद से हैं स्वास्थ्य संबंधी समस्त समस्याओं का समाधान हमारे आयुर्वेद में सहज ही प्राप्त होता है।

"एतत् अंगरस संतम् अंगिरा इत्याचक्षते।"

अर्थात् प्राणी विज्ञान जीवनविधा से जोड़ा गया है अंगिरस का संबंध आयुर्वेद और शरीर विज्ञान से है हमारे अंगों से जो रस निकलता है उसी को अंगिरस कहा जाता है और ये जब अंसतुलित हो जाए तो वह व्याधि बन जाता है और उसका समस्त इलाज आयुर्वेद में सहज समाहित है। आयुर्वेद को ऋग्वेद पूरक भी माना जाता है तथा धन्वंतरि को इसको देवता माना गया है आयुर्वेद परंपरागत भारतीय चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवा प्रणाली 4000-5000 साल से अधिक प्राचीन मानी गई है अगर आयुर्वेद के अर्थ या उत्पत्ति की बात करे तो यह दो शब्दों से मिलकर बना है।

आयुर (दीर्घायु) वेद

आयुर-जीवन

वेद-ज्ञान

अर्थात् हमारे जीवन का विज्ञान आयुर्वेद है।

आयुर्वेद भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति है, जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन को बनाए रखने पर जोर देती है। यह न केवल उपचार के लिए, बल्कि रोगों की रोकथाम और जीवनशैली सुधार के लिए भी प्रभावी है। आयुर्वेद का प्रभाव आज दुनिया भर में बढ़ रहा है, खासकर जब लोग प्राकृतिक और समग्र स्वास्थ्य उपचार की ओर रुख कर रहे हैं। आयुर्वेद के सिद्धांतों पर आधारित चिकित्सा पद्धतियाँ और औषधियाँ आजकल अंतरराष्ट्रीय

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

चिकित्सा संस्थानों में भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही हैं। इसके जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक उपचारों का उपयोग आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों में भी किया जा रहा।

वर्तमान युग भौतिकतावादी युग है, जहाँ विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में नित्य व नवीन प्रयोग व शोध हो रहे है, जिसने सम्पूर्ण सृष्टि एवं विश्व को नया आयाम भी प्रदान किया है, एक नए आयाम में, नए रूप को प्राप्त करने के बाद भी, सम्पूर्ण सृष्टि भारतीय संस्कृति के रूप में मनुष्य के प्रत्येक जीवन सम्बन्धी पक्ष में अपनी गरिमा तथा प्रासंगिकता को प्रत्येक क्षण सिद्ध करती आ रही है। आज के युग मे भारतीय संस्कृति के प्रसारभूत स्वरूप भारतीय ज्ञान की प्रासंगिकता भी स्वतः ही सिद्ध है। फिर भी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक बार फिर से इस आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान की परम्परा को पुष्ट कर दिया है।

सुश्रुत संहिता में भी आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि -

"व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्षः,
स्वास्थ्यस्य स्वास्थ्यरक्षणं च आयुर्वेद।"

आयुर्वेद भारतीय आयुर्विज्ञान है, आयुर्विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध मानव शरीर को निरोगी रखने, रोग हो जाने पर रोग से मुक्त करने अथवा उसका शमन करने तथा आयु बढ़ाने से है। जैसा कि उद्धरत है -

"आयुर्वेदयति बोधयति इति आयुर्वेदः।"

अर्थात, जो शास्त्र आयु का ज्ञान कराता है, उसे आयुर्वेद कहते है।

चरक संहिता में भी आयुर्वेद को परिभाषित करते हुए कहा गया है-

"हिताहितं सुखं दुखमायुस्तस्य हिताहितम्
मान च तच्च यक्तुक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।'

आयुर्वेद के आदि आचार्य अश्विनी कुमार माने जाते है। आयुर्वेद एक लोकोपयोगी जनजीवन से सम्बन्ध रखने वाला शास्त्र है। फलस्वरूप लौकिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाले पुराणों में आयुर्वेद का विषय वर्णित होना स्वाभाविक है। आयुर्वेद में अनेक विभाग है जिसमें निदान

(रोग निदान) तथा रोग की चिकित्सा मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। विभिन्न प्रकार के रोगों के निवारण हेतु विभिन्न प्रकार की औषधियों का स्वरूप तथा उनके गुणों का परिचय पुराणों में विस्तृत एवं स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट है विशेषकर विश्वज्ञान कोशीय स्वरूप प्राप्त अग्निपुराण, गरुडपुराण में आयुर्वेद का वर्णन प्रचुरता से उपलब्ध होता है।

अग्निपुराण में अनेक विद्याओं का सुन्दर समावेश है। इस पुराण के सन्दर्भ में पुराणकार का कथन है-

"आग्नेये हि पुराणेऽस्मिन् सर्वा विद्याः प्रदर्शिताः।"

अर्थात् इस आग्नेय (अग्नि) पुराण में सभी विद्याओं का वर्णन है।
अग्निपुराण के 279वें अध्याय से 300 वें अध्याय तक विभिन्न रोग, रोगलक्षण तथा उपचारार्थ औषधियों का विषद विवेचन प्राप्त होता है। 279वें अध्याय में सिद्ध औषधियों का निरूपण किया गया है। अग्निपुराण में वर्णित है -

"आयुर्वेद प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत्।
देवों धन्वन्तरिः सारं मृत सञ्जीवनी करम।।"

अग्नि वशिष्ट जी से कहते है कि अब मैं उस आयुर्वेद का वर्णन कर रहा हूँ जिसको भगवान धन्वन्तरी ने सुश्रुत को उपदेश दिया था। यही आयुर्वेद का सार है और मृत पुरुष को भी जीवित बना देता है। सुश्रुत उवाच –

"आयुर्वेदं मम ब्रूहि नराश्रेभरूर्गदनम्।
सिद्धयोगान् सिद्धमन्त्रान् मृत सञ्जीवनीकरान् ।।"

अर्थात् सुश्रुत धन्वन्तरी से कहते है कि आप मुझे मनुष्य, घोड़े तथा हाथी के रोगों को दूर करने वाले आयुर्वेद के विषय में बताइए। अग्निपुराण में मानव के हितकारी आयुर्वेद के अतिरिक्त वृक्ष, गौ, अश्व, गज आदि के रोगों उन रोगों के निदान एवं स्वरूप का वर्णन देखने को मिलता है जिसमें सर्वप्रथम वृक्षायुर्वेद का स्वरूप व उनके रोग व शमन स्वरूप को बताते है। वृक्षायुर्वेद का वर्णन करते हुए धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते है -

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

"वृक्षायुर्वेदमाख्यास्ये प्लक्षच्नोत्तरतः शुभः ।
प्राग्वटो याम्यतस्त्वाम्म्र आप्ये अश्वत्थः क्रमेणतु।।"

अर्थात् धन्वन्तरी कहते है कि गृह के उत्तर में पाकड़ का पेड़ शुभ होता है, पूर्व दिशा में वट, दक्षिण दिशा में आम और पश्चिम दिशा में पीपल का वृक्ष शुभ माना जाता है। अग्निपुराण में ही मनुष्य की आयु बढ़ाने वाली औषधियों का भी यथा उचित वर्णन किया गया है -

"कल्पान्मृत्यु जयान्वक्ष्ये हिआयुर्दान्नोगमर्दनान्।
त्रिशती रोगहास व्यामध्वाज्य त्रिफलामृता ।।
परंपलार्द्धकर्ष वात्रिफलांस कंटग तथा।
बिल्व तैलस्य नस्यज्च मांस पंचशतीकविः।।"

धन्वन्तरी सुश्रुत से कहते है कि मृत्यु जय कल्पों का वर्णन करता हूँ जो आयु देने वाले तथा सभी प्रकार के रोगों का मर्दन करने वाले है। तीन सौ वर्ष की आयु देने वाली मधु, घी, त्रिफला तथा गिलोय का औषधि रूप में सेवन करना लाभदायक होता है। चार तोले, दो तोले अथवा एक तोले की मात्रा में प्रतिदिन त्रिफला के सेवन से भी वही फल देता है। एक मास तक बिल्व तैल का नस्य लेने से पाँच सौ वर्ष की आयु एवं कवित्व शक्ति प्राप्त होती है। अग्निपुराण के 294 वें अध्याय में नागों का लक्षण, उनके भेद तथा सर्पदंश के समय तिथि तथा नक्षत्र के फल का वर्णन किया गया है। अग्निपुराण में वर्णन प्राप्त होता है -
घृत के साथ गोबर के रस का पान करने से साँप से डसे हुए मनुष्यों के जीवन की रक्षा होती है। विष्णुपुराण में वर्णित कथा के अनुसार नागराजों ने नर्मदा को वरदान दिया था, जो कोई तेरा स्मरण करते तेरा नाम लेगा, उसको सर्प विष से कोई भय नहीं होगा, इसका उल्लेख इस सूक्त में है -

"नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि।
नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विष सर्पतः।।"

गरुण पुराण में विष्णु ने गरूड़ को विश्व की सृष्टि बतायी गयी है इसलिये इसका नाम गरुड़ पुराण अभिहित हुआ। आयुर्वेद के आवश्यक निदान तथा चिकित्सा का वर्णन अनेक अध्यायों

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

के अन्तर्गत किया गया है। गरुड़ पुराण के आचार काण्ड के अन्तर्गत आयुर्वेद सम्बन्धी प्रकरण उपलब्ध होता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा और आयुर्वेद का योगदान न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में महत्वपूर्ण है। यह न केवल हमारे ऐतिहासिक धरोहर का हिस्सा है, बल्कि आधुनिक शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारतीय प्रणाली की उपयुक्तता और प्रभाव को प्रदर्शित करता है। भारत को अपनी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करने और इसे संरक्षण और संवर्धन की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

आयुर्वेदिक पद्धति सस्ती और सुलभ है। इसे शिक्षा में शामिल करके हर वर्ग के लोगों को सरल और प्राकृतिक तरीके से स्वास्थ्य सुधारने का ज्ञान दिया जा सकता है। इस प्रकार, आयुर्वेद को हमारी शिक्षा प्रणाली में शामिल करना न केवल छात्रों के स्वास्थ्य और विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और परंपरा को सहजने और आगे बढ़ाने का भी एक प्रभावी माध्यम है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गोपथ ब्राह्मण-१६१६७
2. रोग चिकित्सा की चमत्कारी औषधिया आचार्य विद्याधर शुक्ल
3. ऋग्वेद
4. अथर्वेद-१३६३६१०
5. अमरकोश की रामाश्रमीटीका - २६४६१३५
6. निरुक्त-६६२२ दूर्गाचार्य सांस्कृतिका, छज्जूराम शास्त्री
7. चरक संहिता-५१२६-२७